फ़रवरी माह का परिचय

१ फ़रवरी, २०२१

आत्मीय पाठक,

सिद्धयोग पथ पर फ़रवरी माह में आपका स्वागत हैं।

इस माह मनाए जाने वाले अवसरों में से एक है, सन्त वैलेन्टाइन दिवस। सिद्धयोग पथ पर, सन्त वैलेन्टाइन दिवस एक ऐसा अवसर है जब हम प्रेम के विषय में गुरुमाई चिद्विलासानन्द और बाबा मुक्तानन्द द्वारा दी गई सिखावनियों पर पर मनन करें और उन सिखावनियों को अपने जीवन में अपनाकर हमने जो सीखा है, उस पर भी मनन करें।

जब अचला से मेरा विवाह हुआ तो प्रारम्भिक दिनों में, मुझे प्रेम को अपने कृत्यों में लागू करने के बारे में श्रीगुरुमाई की एक सिखावनी पर चिन्तन करने व उसे अपने जीवन में उतारने का एक सशक्त अनुभव हुआ था। कई वर्ष पहले, एक बार दर्शन के समय जब मैंने श्रीगुरुमाई को प्रणाम किया तब उन्होंने मुझसे कहा, "क्या तुम अपनी पत्नी की देखभाल कर रहे हो?" यह सुनकर मुझे सचमुच आश्चर्य हुआ और मैंने सोचा कि मैं बता दूँ कि अचला कितनी मज़बूत है, अतः मैंने तुरन्त ही कह दिया, "नहीं, गुरुमाई जी, अचला अपनी देखभाल स्वयं करती है।" निश्चित ही यह कोई अच्छा उत्तर नहीं था, और श्रीगुरुमाई ने अपना प्रश्न दोहराया—"क्या तुम अपनी पत्नी की देखभाल कर रहे हो?" और तब मैंने, यह सोचकर कि यह उत्तर मेरे विश्वास को दर्शाएगा, तुरन्त ही अपने मस्तिष्क में उभरा अगला उत्तर दे दिया : "गुरुमाई जी, अचला की देखभाल तो भगवान करते हैं।" गुरुमाई जी ने गहरी दृष्टि से मेरी ओर देखते हुए अपना प्रश्न पुनः दोहराया, "क्या तुम अपनी पत्नी की देखभाल कर रहे हो?" देर से ही सही, पर शायद मैं उनका आशय समझने लगा। मैंने कहा, "मैं कोशिश करूँगा, गुरुमाई जी।" और उन्हें प्रणाम कर, मैं अपने स्थान पर लौट आया व उनके शब्दों पर मनन करने लगा।

मुझे समझ में आने लगा कि मैं प्रायः केवल अपनी आवश्यकताओं का ही ध्यान रखता हूँ, मानो मैं एक पति न होकर केवल साथ रहने वाला एक रूममेट हूँ। मुझे एहसास हुआ कि अब बदलने का समय आ गया है। मैं इस बात पर विचार करने लगा कि अचला का ध्यान रखने का वास्तविक अर्थ क्या है और मुझे समझ में आने लगा कि इसमें सब कुछ शामिल है—सूप बनाने से लेकर उसके अत्यन्त व्यस्त जीवन के सभी दैनिक कार्यों में उसकी सहायता करना भी। उसकी रुचियों और चिन्ताओं के प्रति मैं और अधिक सजग हो गया और यह कोशिश करने लगा कि मैं उसके जीवन की चुनौतियों व खुशियों में उसका साथ दूँ।

समय के साथ, मैं उन बातों के प्रति जागरूक होने लगा जिनका अनुभव मैंने अपने जीवन में पहले कभी नहीं किया था यानी एक परमप्रिय मित्र व जीवनसाथी के साथ हृदय व मन की गहराई से जुड़ने के रहस्य के प्रति और साथ ही इस भाव के प्रति भी कि अलग-अलग व्यक्ति होने के साथ-साथ, "हम" एक भी हैं।

समय के साथ और चिन्तन द्वारा, जब अपने वैवाहिक जीवन में श्रीगुरुमाई के प्रश्न को केन्द्र मानकर मैं उसका उत्तर खोजने लगा तो अचला व मैंने देखा कि इससे हमारे आपसी प्रेम के अनुभव को और अधिक गहराई मिलती जा रही है।

इस सुन्दर और चुनौतीपूर्ण संसार में, हम कहीं भी हों, श्रीगुरुमाई की सिखावनियों पर चिन्तन-मनन करना और नियमित रूप से सिद्धयोग के अभ्यासों में संलग्न रहना, हममें से हर एक को गहनता से पोषित कर सकता है। जैसे-जैसे हम श्रीगुरुमाई की सिखावनियों को अभ्यास में उतारते जाते हैं, हमारे कृत्यों में दूसरों के प्रति प्रेम, व्यावहारिक रूप से और खुले दिल से व्यक्त होता है। हमारे अन्तरतम में जो प्रेम विद्यमान है, उससे जुड़कर और उसे अपने कृत्यों में उतारकर, हम इस विश्व में प्रेम को प्रकट रूप दने में सहभागी होते हैं।

***

सन्त वैलेन्टाइन दिवस के अतिरिक्त, फ़रवरी माह, हमें भारत के दो महत्त्वपूर्ण त्यौहारों के बारे में सीखने व उनका उत्सव मनाने का तथा चीनी नववर्ष का स्वागत करने का अवसर भी प्रदान करता है।

गणेश जयन्ती : १५ फ़रवरी

गजानन भगवान श्रीगणेश नवारम्भों के देवता के रूप में सम्पूर्ण भारतवर्ष में अतिप्रिय देवता हैं। इस माह में, यह बात उल्लेखनीय है क्योंकि इस माह हम उनकी जयन्ती के साथ ही शुभारम्भ के दो अन्य त्यौहार भी मनाने जा रहे हैं। गणेश जी विघ्नहर्ता हैं और शक्ति व बुद्धि के मूर्तरूप भी हैं। एक हाथ अभय मुद्रा में उठाए, वे अपने भक्तों को शान्ति व अभय प्रदान करते हैं। गणेश जयन्ती की तैयारी करने के लिए आप, सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर श्रीगणेश जी की कथाओं, स्तोत्रों, भजनों को पढ़ सकते हैं व छवियों के दर्शन कर सकते हैं और साथ ही उन पर मनन भी कर सकते हैं।

वसन्त पंचमी : १६ फ़रवरी

वसन्त पंचमी के त्यौहार के समय, भारत में वसन्त ऋतु के आगमन का उत्सव मनाया जाता है। इस दिन लोग, देवी सरस्वती का पूजन-वन्दन करते हैं। देवी सरस्वती, विद्या, संगीत, भाषा व कला की

देवी हैं। सिद्धयोग पथ की वेबसाइट हमें ऐसे कई तरीक़े प्रदान करती है जिनसे हम महासरस्वती के विषय में अपने ज्ञान को समृद्ध कर सकते हैं और उनके आशीर्वादों का आवाहन कर सकते हैं।

चीनी नववर्ष

चीनी कैलेन्डर में यह वृषभ-वर्ष यानी बैल का वर्ष है जो इस वर्ष १२ फ़रवरी से आरम्भ होकर ३१ जनवरी २०२२ को समाप्त होगा। संसार के कई देशों में लोग पालतू व जंगली, दोनों तरह के पशुओं के अनेक महान गुणों का सम्मान करते हैं जो उनके जीवन के अंग हैं। चीनी लोग, अपने जीवन में उपयोगी पशुओं और उनके गुणों को सराहने का जो एक तरीक़ा अपनाते हैं, वह है, बारह वर्ष के चक्र में, एक वर्ष को एक पशु का नाम प्रदान करना। ऐसा माना जाता है कि किसी व्यक्ति का जन्म जिस वर्ष विशेष में हुआ है, वह वर्ष जिस पशु के नाम है, उसके गुण उस व्यक्ति में होते हैं। उदाहरण के लिए, यह वर्ष, वृषभ-वर्ष है। वृषभ-वर्ष में जन्म लेने वाले व्यक्ति, अपने धैर्य, निष्ठा, सकारात्मक स्वभाव व अपने काम में दृढ़ नैतिकता के लिए जाने जाते हैं और अपनी योजनाओं को पूरा करने में अपनी लगन के लिए विशेषरूप से उनका सम्मान किया जाता है।

***

मैं आपको आमन्त्रित करता हूँ कि इस माह के दौरान, आप थोड़ा ठहरकर उस प्रेम पर चिन्तन-मनन करें जो आपके अन्तर में जाग्रत हुआ है, साथ ही इस पर भी चिन्तन करें कि श्रीगुरुमाई की सिखावनियों का अध्ययन तथा उनका परिपालन करने से आपका जीवन किस तरह रूपान्तरित हुआ है। आप अन्य लोगों को क्या बातें बताएँगे? आप अन्तर की किन खोजों की ख़ुशी मनाएँगे? आप अपने कृत्यों, विचारों और शब्दों में निहित किस प्रेम को पहचानेंगे? और इस तरीक़े से चिन्तन करके, आप इस प्रेम को अभिव्यक्त करने के कुछ और अवसरों को किस तरह खोजेंगे?

मेरी ओर से शुभकामनाएँ कि फ़रवरी का माह आप सभी के लिए आनन्दपूर्ण, सुरक्षित व सन्तोषप्रद हो!

आदर सहित,
पॉल हॉकवुड

© २०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।